IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कालीबंगा :-एक पुरातात्विक धरोहर का विश्लेषण

Kalibanga: An Analysis of an Archaeological Heritage

Dr.Priyanka Sahu
Assistant Professor history
Government mahakoshal arts and commerce college jabalpur m.p

Abstract

सिंधु घाटी सभ्यता के सबसे महत्वपूर्ण स्थलों में से एक कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ है काली चूड़ियां। इसका नाम यहां मिली भारी संख्या में टेराकोटा चूड़ियों के कारण पड़ा है।राजस्थान की पीलीबंगा तहसील में अब सूख चुकी घग्गर (सरस्वती) नदी के तट पर स्थित कालीबंगा न केवल भारत में सबसे महत्वपूर्ण सिंधु घाटी स्थलों में से एक है, बल्कि यह प्राचीन भारतीय कृषि, वास्तुकला और धार्मिक जीवन के विकास को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी है।एक स्थल जहां हड़प्पा (Pre-Harappan) और परिपक्व हड़प्पा (Mature Harappan) दोनों साँस्कृतिक स्तरों के प्रमाण एक साथ प्राप्त होते हैं भारतीय पुरातत्व के इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य है इसी महत्व को देखते हुए ही इस शोध पत्र का विषय कालीबंगा रखा गया इस शोध पत्र के अंतर्गत में कालीबंगा की स्थिति, उसका उत्खनन , महत्व , भवन निर्माण कला, मृदभांड कल का विस्तृत वर्णन किया गया है साथ ही कालीबंगा में प्राप्त हुए दुर्ग, जूते हुए खेत विविध काल की संस्कृति, उसका उदय और अस्त होना,नगर विन्यास , अग्निकुंड या वेदिकाए (Altar) मुहरे (Seals),मृण्मूर्तियां (terracotta) ,शवसंस्कार प्रथा (Burial system) , आदि जो अपना विशिष्ट सांस्कृतिक महत्व रखते हैं के विषय में जानकारी प्रस्तुत की गई है जिसका प्रमुख उद्देश्य कालीबंगा के महत्व को प्रकट करना है कालीबंगा का सबसे आरंभिक दस्तावेज़ ब्रिटिश अधिकारी और विद्वान जेम्स टॉड की किताब "**एनल्स एंड एंटिक्विटीज़ ऑफ राजस्थान**" में दर्ज था। सन 1917 में इतालवी इंडोलॉजिस्ट **लुइगी पियो टेस्सीटोरी** (Luigi Pio Tessitori) ने इस क्षेत्र के पुरातात्विक रूप से महत्वपूर्ण सभी स्थलों को सूचीबद्ध करने के लिए राजपूताना के ऐतिहासिक सर्वेक्षण के तहत इस क्षेत्र का दौरा किया था। अपनी यात्रा के दौरान उन्हें उस जगह पर ऐसे साक्ष्य मिले थे, जो उनके अनुसार, प्रागैतिहासिक काल के थे। दुर्भाग्य से सन 1919 में तैस्सीतोरी की मृत्यु हो गई और काम रुक गया। तैस्सीतोरी की यात्रा के वर्षों बाद, सन 1950 में पुरातत्वविद् अमलंदा घोष जब बीकानेर के उत्तरी क्षेत्र में सूखी हुई नदी-घाटियों की खोज कर रहे थे, तब कालीबंगा पर एक बार फिर नज़र पड़ी। घोष, हड़प्पा सभ्यता से संबंधित इस स्थल की पहचान करने वाले पहले व्यक्ति थे। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तहत सन 1961-1969 तक लगातार कालीबंगा में खुदाई की

गई, जिसका नेतृत्व भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तत्कालीन महानिदेशक बी. बी. लाल और पुरातत्वविद् बी .के. थापर कर रहे थे।इसके विशिष्ट महत्व के कारण ही भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने कालीबंगन में एक पुरातत्व संग्रहालय की स्थापना की, जिसमें हड़प्पा-पूर्व और हड़प्पा-काल की खुदाई में मिली वस्तुएं रखी गई। उपरोक्त विशेषताओं के कारण ही शोध पत्र में कालीबंगा के महत्व को प्रस्तुत किया गया है।

Kalibangan—one of the most significant sites of the Indus Valley Civilization—literally translates to "Black Bangles." It derives its name from the vast number of terracotta bangles discovered there. Situated on the banks of the now-dried-up Ghaggar (Saraswati) River in the Pilibanga Tehsil of Rajasthan, Kalibangan is not only one of the most important Indus Valley sites in India but also serves as a crucial link for understanding the evolution of ancient Indian agriculture, architecture, and religious life. The fact that a single site yields simultaneous evidence of both Pre-Harappan and Mature Harappan cultural phases constitutes a highly significant aspect in the history of Indian archaeology. Recognizing this very significance, Kalibangan has been chosen as the subject of this research paper. This paper provides a detailed description of Kalibangan's geographical location, its excavation history, significance, architectural styles, and pottery traditions. Furthermore, it presents information regarding the site's citadel, ploughed fields, cultural phases across different eras (including their rise and decline), town planning, fire altars (or *vedikas*), seals, terracotta figurines, burial practices, and other artifacts—each possessing its own distinct cultural significance—with the primary objective of highlighting the overall importance of Kalibangan. The earliest documented reference to Kalibangan appears in the book *Annals and Antiquities of Rajasthan* by the British officer and scholar James Tod. In 1917, the Italian Indologist Luigi Pio Tessitori visited this region as part of a historical survey of Rajputana, aiming to compile a comprehensive list of all archaeologically significant sites in the area. During his visit, he discovered evidence at the site which, in his estimation, dated back to the prehistoric era. Unfortunately, Tessitori passed away in 1919, and the work subsequently came to a halt. Years after Tessitori's travels, in 1950, while archaeologist Amalananda Ghosh was exploring the dried-up river valleys in the northern region of Bikaner, Kalibanga once again came to light. Ghosh was the first person to identify this site as being associated with the Harappan Civilization. Under the aegis of the Archaeological Survey of India, continuous excavations were conducted at Kalibanga from 1961 to 1969, led by B.B. Lal—the then Director General of the Archaeological Survey of India—and archaeologist B.K. Thapar. It was precisely due to its unique significance that the Archaeological Survey of India established an archaeological museum at Kalibanga, housing artifacts recovered during the excavations that date back to both the Pre-Harappan and Harappan periods. It is on account of these aforementioned characteristics that the significance of Kalibanga has been presented in this research paper.

की वर्ड key word:-

भग्नावशेष,कार्बन-14,घग्घर,प्राक् हड़प्पा,

परिचय introduction

पुरातत्व सम्बन्धी सामग्री का राजस्थान के इतिहास के निर्माण में एक बड़ा स्थान है। इसके अन्तर्गत अन्वेषणों और खनन से मिलने वाली ऐतिहासिक सामग्री है। यद्यपि इस प्रकार की सामग्री का राजनैतिक इतिहास से कोई सीधा संबंध नहीं है, तथापि इमारतें, भवन, किले, राजप्रासाद, घर, बस्तियाँ, भग्नावशेष, मुद्राएँ, उत्कीर्ण लेख, मूर्तियां स्मारक आदि से ऐतिहासिक कालक्रम का निर्धारण तथा वास्तु और शिल्प शैलियों का वर्गीकरण किया जा सकता है। जनजीवन की पूरी झांकी पुरानी बस्तियों तथा अन्य प्रतीकों से प्रस्तुत की जा सकती है। स्मारकों के अध्ययन से न केवल स्थापत्य और मूर्ति कला ही जानी जाती है, अपितु उनसे तत्कालीन धार्मिक विश्वास, पूजा पद्धति और सामाजिक जीवन पर भी प्रकाश पड़ता है। प्रागैतिहासिक काल से मध्यकाल के अनेक भग्नावशेष तत्कालीन दशा का चित्र हमारे सम्मुख उपस्थित करते हैं। इसी प्रकार शिलालेख, सिक्के एवं दानपत्र भी अपने समय की ऐतिहासिक घटनाओं एवं स्थिति के साक्षी हैं। राजस्थान में मिलने वाले भग्नावशेष यहाँ की प्राचीनता की जानकारी देने में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रमाणित हुए है। भग्नावशेषों के स्तरों के अध्ययन से प्राचीनकाल के तिथिक्रम तथा जन जीवन के विविध पक्ष निर्धारित होते है। इस प्रकार राजस्थान में कालीबंगाँ, आहड़, नागौर, गिलुंड सांभर, रेड, बैराट् आदि के खंडहर बड़े महत्व के हैं। इनके उत्खनन से प्राप्त सामग्री विविध और विभिन्न निष्कर्ष निकालने में सहायक सिद्ध हुई है।

कालीबंगाँ की स्थिति(The Situation of Kalibangan)

राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में दिल्ली से लगभग 310 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम की ओर सूखी घग्घर नदी के किनारे कालीबंगाँ स्थित है। घग्घर ही प्राचीन काल की सरस्वती नदी है, जिसका उल्लेख पुराणों में ही नहीं अपितु वेदों तक में प्राप्त होता है। यहाँ पर दो प्रमुख पुराने टीले हैं, जो एक दूसरे के पास-पास है

कालीबंगाँ संस्कृति का समय(Time of this Culture)

प्राक् हड़प्पा कालीबंगाँ संस्कृति का आरंभ कार्बन-14 प्रणाली के आधार पर 2450 ई. पू. के लगभग निर्धारित किया गया है। कार्बन 14 प्रणाली के आधार पर कालीबंगाँ की बस्ती का जीवन-काल लगभग 4-5 सौ वर्ष निश्चित किया गया है। यह स्थल ई. पू. द्वितीय सहस्राब्दि के आरंभ में उजड़ गया था। इस प्रकार कालीबंगाँ लगभग 2300 ई. पू. से लेकर 1800 ई. पू. तक बसा था । कालीबंगाँ की बस्ती का काल भी अन्य हड़प्पा संस्कृति के स्थलों के ही समान है।

कालीबंगाँ का महत्व

(The Importance of Kalibangan)

राजस्थान की सबसे अधिक प्राचीन एवं महत्वपूर्ण सभ्यता दृषद्वती और सरस्वती नदी की घाटी में पाई है, जो हड़प्पा की सभ्यता से भी पुरानी बताई जाती है। इन नदियों के कांठे पर कई ऐसे स्थान हैं जो उस युग के प्रतीक हैं। इनमें

कालीबंगाँ बड़ा प्रसिद्ध है। आज से लगभग 4-5 हजार वर्ष पूर्व यहाँ उदीयमान सभ्यता विकसित हुई, जिसके प्रमाण यहाँ से खुदाई से प्राप्त अनेक वस्तुएँ है।

दुर्भाग्यवश कालान्तर में ऐसी समृद्ध सभ्यता के केन्द्र का ह्रास हो गया। संभवतः इसका कारण भूकम्प अथवा कच्छ के रन के रेत से भर जाना रहा होगा जो समुद्री हवाएँ पहले इस ओर से नमी लाती थीं और वर्षा का कारण बनती थीं, वे ही हवाएँ सूखी बहने लगी और कालान्तर में यह भू-भाग रेत का समुद्र बन गया। पुराणों से प्राप्त सरस्वती नदी के अन्तर्ध्यान का उल्लेख इसी दशा का द्योतक हैं।

कालीबंगाँ कॅा उत्खनन

(Excavation of Kalibangan)

भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद यहाँ के पुरातत्व विभाग ने अत्यन्त परिश्रम एवं रुचि से अपना अन्वेषण कार्य प्रगति पथ पर रखा। सिंघुघाटी सभ्यता के अन्तर्गत हड़प्पा और मोहेंजोदड़ों के उत्खनन ने विश्व के सम्मुख भारतीय सभ्यता और संस्कृति की प्राचीनता का एक अनूठा अध्याय खोल दिया था। पुरातत्वविदों ने भी अनेक दृष्टिकोणों से इसका परीक्षण कर अपने अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किए थे। 15 अगस्त सन् 1947 ई. को उपयुक्त दोनों स्थान पाकिस्तान के अधीन हो गए। उस समय से ही भारतीय विद्वान् यह प्रयास करने लगे थे कि इस सिंधु सभ्यता का विस्तार या प्रभाव पंजाब, राजस्थान तथा गुजरात में कहाँ कहाँ हुआ, इसका ज्ञान होना चाहिए। परिणाम स्वरूप इन स्थानों के संभावित प्राचीन स्थलों का निरीक्षण किया जाने लगा तथा अन्वेषण कार्य द्रुतगति से किया जाने लगा। इनमें सुप्रसिद्ध पुराविद् श्री अमलानंद घोष महोदय ने राजस्थान के कालीबंगाँ के महत्वपूर्ण प्राचीन टीलों को खोज निकाला। तदनन्तर इस सभ्यता की जानकारी के लिए यहाँ कई सोपानों में खुदाई का काम भारत सरकार के पुरातत्व विभाग के द्वारा किया गया। इसे श्री ब्रजवासी लाल के निर्देशन में श्री बालकृष्ण थापड़, श्री एम. डी. खरे, श्री के. एम. श्रीवास्तव तथा श्री एस. पी. जैन आदि के सहयोग से लगभग 9 वर्षों तक संपादित किया गया। घग्घर (सरस्वती) नदी के चुने गए दो टीले आसपास की भूमि में लगभग 12 मीटर की ऊंचाई पर थे। इनका क्षेत्र लगभग किलोमीटर था। इनमें गहरी तथा चौड़ी खुदाई की गई, जिससे कई पक्षों पर अच्छा प्रकाश पड़ा। इन टीलों में केवल सैंधव या हड़प्पा सभ्यता के ही नहीं, अपितु उससे भी प्राचीनतर प्राक् हड़प्पा संस्कृति के अवशेष भी विद्यमान थे। पुरातात्विक प्रमाणों के आधार पर ये दोनों संस्कृतियाँ दो विभिन्न युगों या कालों से संबद्ध हैं-

1. प्राक् हड़प्पा संस्कृति युग या प्रथम काल, और

2. सैंधव संस्कृति या हड़प्पा युग या द्वितीय काल।

प्राक् हड़प्पा संस्कृति युग (pre-harappa Culture age)

कालीबंगाँ में प्राक् हड़प्पा या सैंधव संस्कृति के चिन्ह केवल पश्चिमी टीले के निचले स्तरों में मिले हैं। इस काल में बस्ती कच्ची ईंटों से बने एक परकोटे के भीतर विद्यमान थी। यह परकोटा दो बार अलग-अलग समय में बनाया गया था। मूलरूप में परकोटे की औसत चौड़ाई 1.90 मीटर थी, किन्तु बाद में इसे अन्दर की ओर से 3.70 मीटर से लेकर 4.10 मीटर तक चौडा किया गया। दोनों ही वास्तु प्रकालों में ईंटों का आकार 20x30x10 सेन्टीमीटर था। उत्तरी और दक्षिणी

जामों के मध्य परकोटे की लम्बाई 250 मीटर थी, किन्तु पूर्वी व पश्चिमी प्राचीरों के बीच इसकी ठीक चौड़ाई का ज्ञान नहीं हो सका। अनुमान है कि इस क्षेत्र की क्षेत्र की चौड़ाई 180 मीटर रही होगी। प्राक् हडप्पा युग के मकान भी कच्ची ईंटों के बनाए जाते थे। इन ईटों का आकार परकोटे में लगी ईटों के तुल्य ही था। पकी हई ईटे केवल सीमित मात्रा में मिली हैं, जो सबकी सब फन्नी या फच्चर के आकार की (wedge shaped) थी, अर्थात् उनका एक सिरा मोटा और एक सिरा पतला होता था। कुछ दीवारों में कहीं-कहीं लेप या पलस्तर की पपड़ियाँ भी लगी मिली है। मूलरूप में संभवत: सभी दीवारों में मिट्टी का लेप किया जाता होगा। इस काल के मकानों की सीध तथा ईंटों का आकार हड़प्पा युगीन मकानों के पंक्तिबंधन तथा ईटों के प्रकार से नितान्त भिन्न था ।

भवन निर्माण (Building Construction)

हड़प्पा पूर्व की संस्कृति के मकानों में दालान, 4-5 बड़े कमरे एवं कुछ छोटे कमरे भी रहते थे। मकानों के आगे चबूतरे रहते थे और कमरों की फर्श को चिकनी मिट्टी से लीप दिया जाता था। कहीं-कहीं पकाई गई ईटों के फर्श भी मिले हैं। गंदे पानी को निकालने के लिए एक विशेष प्रकार के गोलाकार भांड होते थे, जिन्हें एक दूसरे पर लगा कर रखा जाता था, जिससे चारों ओर पानी न फैल कर जमीन में सोख जाए । मकानों की छतें भी मिट्टी की बनती थीं, जिनको लकड़ी की बल्लियों से बनाया जाता था । छतों को कवेलू से ढका जाता था। मकानों में चूल्हों के भी अवशेष मिले हैं, जिन्हें सतह के ऊपर और नीचे बनाया जाता था। नीचे वाले चूल्हे के लिए ईधन देने और धुंआ निकालने के विशेष प्रकार के छिद्र रखे जाते थे। छत पर आने की सीढ़ियाँ भी यहाँ देखी गई हैं। मार्ग की चौड़ाई 5 से 5 .5 मीटर तक थी। सड़कों को पक्का बनाने की पद्धति का प्रचार भी यहाँ पर था। पक्की ईंटों का प्रयोग कुओं एवं नालियों में किया जाता था ।

जुता हुआ खेत (Ploughed field)

कालीबंगाँ के प्रथम काल या प्राक् हड़प्पा की सर्वोत्तम उपलब्धि एक जुते हुए खेत के अवशेष है। यह खेत पुरातत्व की दृष्टि से कृषिक्षेत्र का संसार में अभी तक प्राप्त प्रमाणों के अनुसार प्राचीनतम उदाहरण है। प्राक् हड़प्पा बस्ती के दक्षिण- पूर्व की ओर परकोटे के बाहर यह खेत खुदाई में मिला है। इसमें दुतरफा जुताई के परिणामस्वरूप हराइयों के निशान एक जालक grid pattern) के रूप में पड़े थे। उत्तर से दक्षिण की सीध में पड़ी हराइयाँ एक दूसरे से 1.10 मीटर के अन्तर मैं थी, जबकि पूर्व पश्चिम की चोर ये एक दूसरे से केवल 30 सेंटीमीटर के कासले पर थीं। संभवत इस प्रकार जुते हुए खेत में दो फसले एक साथ उगाई जाती थीं । कालीबंगों के आसपास आज भी सरसों तथा चनों की मिली जुली खेती इसी ढंग से की जाती है।

मृद्भाँड (Pottery)

कालीबंगाँ की प्राक् हड़प्पा संस्कृति के पश्चिम का प्रमुख माध्यम यहाँ के कुम्हार की विशिष्ट कला थी। यहाँ के प्रथम काल के विभिन्न स्तरों से प्राप्त अनेक प्रकार के मृद्भाँड इस प्रकार के हैं, जिनको संरचना के आधार पर छ: समूहों में विभक्त किया गया है। ये श्रेणियाँ बर्तनों की विशेषता के आधार पर प्रदान की गई हैं। इन को फेबेरिक ए, बी, सी, डी, ई, और एफ की भी संज्ञा दी गई है।

प्रथम समूह (First Group)

इसको fabric A भी कहा गया है। इस श्रेणी के मृद्भांड लाल या गुलाबी रंग के थे। चाक पर बने होने पर भी इनकी गठन भद्दी थी। अधिकांश बर्तनों के उभरे गोलाईदार भाग में काले रंग से चित्रांकन किया गया था। कभी कभी सजावट के लिए इसके साथ सफेद रंग का भी प्रयोग किया जाता था। अलंकरण में प्रमुखतः आड़ी रेखाएँ, वृत्ताद्ध में तिरछी रेखाओं के समूह, जालियाँ, लहरें, त्रिभुजाकार, दुहरी या इकहरी पत्ती, मूंछ से मिलते जुलते अभिप्राय वाले दो सरोंनुमा वृक्षों के बीच बिच्छु की तरह दो जुड़े हुए कीड़े, मकड़ी, चार पत्तीवाले फूल, गुच्छेदार फूल और वर्ग आदि थे। इस प्रकार के ए फेवरीक के बर्तन सीमित कोटि के थे, जैसे चल्लेदार पैदी के कलश, सकोरे एवं गहरी कटोरियाँ। इनमें एक पीठयुक्त कलश तथा दूसरा संकरी मुहरी का कलश उल्लेखनीय है।

द्वितीय समूह *(Second Group)*

इस श्रेणी के अन्तर्गत भांड सावधानी पूर्वक चाक पर बनाए जाते थे । उनके ऊपरी भाग में लाल रंग का लेप किया जाता था और काले रंग से आड़ी लकीरें बनाई जाती थी। पैंदे के अतिरिक्त इन पात्रों के शेष भाग को रेतीली मिट्टी के घोल से पोत कर खुरदरा बना लिया गया था। उसे और अधिक दुरदरा बनाने के लिए गीले कपड़े पर किसी कठोर वस्तु का भी रगड़ने के लिए प्रयोग किया जाता था। इन पात्रों पर विभिन्न प्राकृतिक अभिप्रायों के रूप में पुष्प, पशु व पक्षी सजावट के काले रंग से अंकित किए जाते थे। इस प्रकार के मृद्भांड समूह में विभिन्न प्रकार की मुहारी वाले वर्तुलाकार घड़े ही पाए गए हैं।

तृतीय समूह (third Group)

इस समूह के मृद्भांड लाल रंग के तथा बैंगनीं झांई वाले थे । इनके पृष्ठभाग चिकने और लेपदार होते थे। इन पर काली स्याही से आड़ी रेखाएँ, अर्ध वृत्त तिकोन तितलियाँ, पेड़ पौधों आदि को अंकित किया गया था।इस सी फैब्रिक के अंतर्गत अंडाकार चपटे पैदे वाले घड़े, सीधी किनार वाली कटोरियाँ, थालियाँ तथा पाएदार पात्र आदि उल्लेखनीय हैं।

चतुर्थ समूह (fourth Group)

इस वर्ग के बर्तन लाल रंग के मोठे तथा मजबूत किस्म के थे। इसमें भारी मटके, कटोरियाँ तथा बड़े तसले थे। इनमें छल्लेदार पैदे के तसलों के भीतरी भागों को खुरचकर उनमें अलंकरण किया गया था। कटोरियों और सपाट पैदे वाले तसलों पर लहरिया उत्कीर्ण किए जाते थे। कभी-कभी कुछ बर्तनों में काले रंग से आड़ी रेखाएँ और अर्द्ध वृत्त भी अंकित किए जाते थे ।

पंचम समूह (fifth Group)

इस समूह के बर्तनों में लाल रंग के छोटे तथा बिचले मटके, ढक्कन, कटोरियाँ, नैवेद्य पीठ (पाएदार पात्र) तथा थालियाँ आदि हैं। इन पर काले रंग की चित्रकारी है। इसमें आड़ी रेखाएँ, तिरछी लकीरें, अर्द्ध वृत्त व लहरें हैं। इनके अतिरिक्त मत्स्य शल्क (मछली का भाग), तितलियाँ, मुर्गी, रूढ़िगत पुष्प तथा पत्तों का भी अंकन किया गया है।

षष्ठ समूह (sixth Group)

फैब्रिक एफ बाले इस वर्ग के मृद्भांड सलेटी रंग के हैं। इनका आकार प्रकार द्वितीय समूह के मृद्भांड के तुल्य है। इनमें सपीठ थालियाँ, कटोरियाँ, तसले और घड़े प्रमुख हैं। इनका अलंकरण सामान्य कोटि का है, जिसमें सफेद और काले रंग का प्रयोग किया गया है।

अन्य उल्लेखनीय उपकरण (other important material)

कालीबंगाँ ँकी प्राक् हड़प्पा युगीन संस्कृति के अन्य महत्वपूर्ण उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इनमें करकेतन (chacedeng), बादली पत्थर (agate) तथा यशव के छोटे-छोटे फल हैं। इनमें कुछ पीठदार और कुछ दाँतेदार हैं। तांबा, घिया पत्थर व तामड़े पत्थर के मनके, शंख वलय (कंगन), पकी मिट्टी के खिलौने, गाड़ी के पहिए, खंडित बैल की मूर्ति, जुड़े हुए एवं इकहरे कड़े, हड्डी की सलाइयाँ, सिल बट्टे, तांब के फरसे का फल, काटने का एक औजार तथा कुछ अन्य वस्तुओं के खंड भी है।

हड़प्पा संस्कृति युग(Age of Harappan Culture)

इसके बाद शीघ्र ही यह स्थान पुनः आबाद हो गया। दूसरे काल की इस बस्ती को बसाने वाले हड़प्पा संस्कृति से सम्बद्ध लोग थे। यह भी संभव है कि हड़प्पा कालीन कालीबंगाँ की बस्ती को बनाने में प्राक् हड़प्पा संस्कृति से सम्बद्ध लोगों ने भी योगदान दिया हो। इस दूसरे काल अर्थात् हड़प्पा संस्कृति का अपना एक विशिष्ट स्वरूप तथा श्रेष्ठ आर्थिक स्तर था। इसने कालीबंगाँ ँके प्राक हड़प्पा तत्व को पूर्णरूपेण आत्मसात् कर लिया।

दूसरे काल का विवरण description of the second time)

कालीबगाँ की दूसरे काल की बस्ती दो स्पष्ट भागों में बाँटी थी - पश्चिम की ओर बना दुर्ग तथा पूर्व की तरफ बसा निचला नगर।

कालीबंगों का दुर्ग(The Fort of Kalibangan)

ऊंचाई के विचार से दुर्ग का निर्माण पुराने प्राक् हड़प्पा वास्तु अवशेषों पर तथा नगर का निर्माण पूर्व की ओर स्थित प्राकृतिक धरातल पर किया गया था। दुर्ग का क्षेत्र आकार में सम चर्तुभुज था और दो समान भागों में बंटा हुआ था। दुर्ग के प्राकार (परकोटा) की चौड़ाई 3 से लेकर 7 मीटर तक थी। दीवार को मजबूत बनाने के लिए थोड़े थोड़े फासले पर बुर्ज बनाए गए थे। इस दीवार को बनाने के लिए दो अलग अलग प्रकार की ईंटों को उपयोग में लाया गया था, जिनका आकार क्रमशः 40 x 20 x10 सेंटीमीटर तथा 30x15x7 सेंटीमीटर था। ये दो प्रकार अलग अलग वास्तु प्रकालों के परिचायक हैं। दीवार के प्रथम वास्तु प्रकाल में बड़े आकार की ईटों का प्रयोग किया गया था, जबकि दूसरे प्रकाल में छोटे आकार की ईंटों से चुनाई की गई थी। दुर्ग के दक्षिणी आधे भाग में मिट्टी या मिट्टी की कच्ची ईटों के चबूतरे बने थे। वे एक दूसरे से गलियारों द्वारा विभाजित किए गए थे। इनकी चौड़ाई भी एक समान नहीं थी। चबूतरों

का प्राचीर रचना से कोई वास्तुपरक सम्बन्ध नहीं था। चबूतरों पर गलियारों से बनी सीढ़ियों से चढ़ा जा सकता था। परवर्ती कालों में ईंटों की चोरी एवं अपर्याप्त प्रमाणों के कारण इन चबूतरों के ऊपर की संरचना के बारे में निश्चय रूप से कहना कठिन है। फिर भी अनुमान है कि इन चबूतरों के ऊपर किसी प्रकार के अनुष्ठान होते रहे होंगे, क्योंकि एक चबूतरे पर एक कुआं तथा अग्नि वेदिका के रूप में पक्की ईंटों का बना एक आयताकार कुण्ड था। इसमें गोजातीय पशुओं तथा मृगश्रृंग के अवशेष मिले हैं। एक अन्य चबूतरे के ऊपर एक कुए के निकट एक पंक्ति में 7 आयताकार अग्नि vediya बनी थी। किन्तु दूसरे काल के अन्त में किसी को इनके बीच से काट कर एक नाली निकाली गई थी।

अग्निकुंड या वेदिकाए (Altar) -

इस प्रकार की अग्नि-वैदिकाएँ कालीबंगाँ के नगर में कई मकानों में भी थी। इन अग्नि कुण्डों का वास्तविक प्रयोजन कहना अत्यन्त कठिन है। संभवतः इनका संबन्ध हड़प्पा संस्कृति के लोगों के धार्मिक विश्वासों से रहा होगा। ऐसी अग्नि वेदिकाएँ इस काल की लगभग पूरी बस्ती में पायी गई हैं। इनकी रचना भी अपनी विशेषताओं को लिए हुए है। पहले एक उथला अंडाकार या आयताकार कुण्डनुमा गड्डा खोद लिया जाता था। उसके बीच में आयताकार या बेलनाकार स्तंभ बना दिया जाता था अथवा कभी कभी ईंटें खड़ी कर दी जाती थीं। इन गड्ढों में जले हुए कोयले पाये गए हैं। इससे ज्ञात होता है कि इनका अग्निकुण्ड के रूप में प्रयोग किया जाता था। इन कुंडों में पक्की मिट्टी के पिंड (terracotta cakes) भी पाये गये हैं। संभवतः इनका सम्बन्ध किसी धार्मिक अनुष्ठान से रहा हो।

दुर्ग के द्वार (The Gates of the Fort)

दुर्ग के प्रवेश द्वार उत्तर और दक्षिण की ओर बनाए गए थे। दक्षिणी द्वार अब नष्ट हो चुका है, तथापि अवशेषों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इसमें बाहर की ओर बने सोपान मार्ग से प्रवेश किया जाता था। आवगमन के लिए सीढ़ियों से लगा हुआ एक संकरा गलियारा भी था। उत्तरी द्वार प्राचीर के मध्य दो कुओं के बीच विद्यमान था, जिसमें सोपान मार्ग से जाना संभव था। दक्षिणी प्रवेश द्वार नगर के जनसाधारण के लिए था और उत्तरी प्रदेश द्वार इस दुर्ग के उत्तर में रहने वाले अभिजात वर्ग के लिए। इस दुर्ग की रचना कुछ इस प्रकार से की गई थी कि इसमें किसी भी प्रकार के यान वाले यातायात की संभावना नहीं थी। अभिजात वर्ग के लिए बने दुर्ग के उत्तरी भाग में 3 या 4 प्रवेश द्वार थे।

नगर का विन्यास (lay out of the city)

नगर क्षेत्र में उत्खन्न से ज्ञात होता है कि यहाँ का प्राचीन नगर भी हड़प्पा संस्कृति के अनुरूप एक विशिष्ट प्रकार से सुनियोजित था। इसके चारों ओर कच्ची ईटों का परकोटा बना था। ईंटों का आकार 40x20x10 सेंटीमीटर था। मार्ग और निवास भवनों का धरातल शतरंज पट्ट से मिलता जुलता था। नगर के क्षेत्र की लम्बाई पूर्व से पश्चिम तक लगभग 239 मीटर थी। उत्तर से दक्षिण क्षेत्र के विषय में निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता है। नगर के 8 मुख्य मार्ग खोजे जा सके हैं। इनमें से 5 उत्तर दक्षिण में तथा 3 पूर्व पश्चिम में थे। ऐसा अनुमान है कि टीले के अनखुदे मार्ग में पूर्व पश्चिम दिशा की सड़क दबी होगी। पूर्व से पश्चिम की ओर जाने वाली कई गलिया थीं, जो कि विशेष गृहसमूहों से संबद्ध थीं। गलियों और मुख्य मार्गों की चौड़ाई 80 मीटर के गुणज मान के अन्तर्गत थी। इस एक रूपता से लगता है कि व्यवस्था के लिए यहाँ कोई केन्द्रीय संस्था और सत्ता रही होगी, अन्यथा ऐसा संभव नहीं था। ब्यस्त यानीय यातायात से उत्पन्न दुर्घटनाओं को रोकने के निमित्त सड़क के कोनों में रक्षास्तंभ (fender posts) लगाए गए थे। पहले प्रकार की सड़कें खुदाई अधिकतर कच्ची थीं, जबकि दूसरे प्रकाल में वे मृदपिंडों से पट्टी थीं। सडकों से पानी के निकास के लिए कोई

भी प्रमाण नहीं पाए गए हैं। मकानों के परनाले लकड़ी या पकी ईटों के बने थे। इनका निकास सडक में दवाए गए एवं मांडों से बनाए गए शोषगतों में था। मकानों में बने परनाले खोखले लट्ठों से बनाए गए थे।

***गृह-निर्माण** (House Construction)* -

क्योंकि नगर का विन्यास शतरंज पटल की भांति था, अतः प्रत्येक मकान कम से कम दो या तीन सड़कों की और खुलता था। प्रत्येक मकान में एक आंगन तथा तीन तरफ छः या सात कमरे बने थे। किसी-किसी मकान के आँगन में एक कुआँ भी पाया गया है। एक मकान में ऊपर की छत या मंजिल में जाने के लिए सीढियां बनी थीं । मकान 30x15x7.5 सेंटीमीटर के आकार वाली कच्ची ईटों के बने थे। पकी ईटों का प्रयोग केवल नालियों, कूओं तथा देहलीज के लिए ही किया जाता था। मकानों के भीतर का फर्श सामान्यतया कूटी हुई मिटटी से बनाया जाता था। कुछ मकानों में ऐसे फर्श पर कच्ची ईंटें अथवा मृदपिडों (terracotta cakes) भी बिछाए जाते थे। एक मकान का फर्श पकी मिट्टी की अलंकृत खपरेलों से बना था। इनमें विशिष्ट सिन्धु संस्कृति की ज्यामितिक अलंकरण शैली में एक दूसरे को काटते हुए वृत्त बने थे।

मृद भांड (Pottery) -

कालीबंगों के प्राकार व नमर क्षेत्र में बहुत अधिक मात्रा में मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं। ये हड़प्पा संस्कृति से सम्बद्ध हैं। इन पात्रों में अधिकांश दैनिक जीवन में काम आने वाले, खाने, पीने, छानने तया अनाज या दूसरी सामग्री रखने के विविध प्रकार के बर्तन थे। इनके अतिरिक्त धार्मिक अनुष्ठानों एवं शव संस्कार आदि में प्रयुक्त होने वाले पात्र भी पाए गए हैं। वर्तन सादे तथा अलंकरणयुक्त दोनों ही प्रकार के थे। अलंकरण प्रायः चित्रांकन के रूप में किया जाता था । कुछ पात्रों में सिन्धु लिपि या उत्कीर्ण प्रतीक अंकित थे। इन्हें अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। सामान्यतः गठन एवं सजावट में सभी तरह के बर्तन हड़प्पा संस्कृति के केन्द्रों से उपलब्ध मृत्पात्रों से मिलते जुलते थे। चित्रांकन में मुख्यतः ज्यामितिक वृत्त जालक(intersecting circles), फुल्ले, मत्स्य शल्क (खंड), अश्वत्थ पत्र (पीपल के पत्ते) आदि विशेष दृष्टव्य हैं। भांड स्वरूपों में उल्लेखनीय नैवेद्य पात्र या सपीठ थाली, नुकीली पैदी के कुल्हड़, छिद्रित मृदंगाकार भांड, वर्तुलाकार पात्र, छिद्रित सकर्ण चषक (perforated handled cup)मृदंगाकार मर्तबान (cylindrical beaker), लंबोदर कुम्भ आदि ।

अन्य वस्तुए (other things) -

कालीबंग के उत्खनन से इन विशिष्ट प्रकार के मृद्भांड के अतिरिक्त अन्य भी कई वस्तुए प्राप्त हुई हैं। इनमें प्रमुख चकमक पत्थर के लंबे फलक (Chert Blades), तथा क्रोड (cores), तामड़े पत्थर (Carnetians), काँचली मिट्टी (faience), यशव (jasper), घीया पत्थर (steatite), ताँबे यादि के बने मनके, मिट्टी की चूड़ियाँ, कड़े तथा शंखवलय आदि आभूषण, टोंटीदार प्यालियां (feeding cups), खिलौना गाड़ियाँ, चकमक पत्थर के बने बाट बटखरे, शतरंज या चौसर खेलने की गोटियाँ, मनुष्य, पशु तथा पक्षियों की मृण मूर्तियां गोल, तिकोने और छोटे ढेलों से मिलते जुलते मृदपिंड आदि ।

मुहरे (Seals)-

कालीबंगाँ से सिंधु, या हडप्पा संस्कृति की अत्यन्त विशिष्ट प्रकार की मुद्राएँ तथा मुद्रा-छापें भी मिली है। इनमें विभिन्न प्रकार के पौराणिक एवं वास्तविक पशुओं का चित्रण किया गया है। ये मुद्रा तथा मुद्राछापें घीया पत्थर, काँचली मिट्टी तथा तांबे की है। यद्यपि इनमें अंकित लेख अभी तक निश्चित रूप से नहीं पढ़ जा सके हैं। कुछ मृदपात्रों में उत्कीर्ण लेखों के लिखने के ढंग से यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि सिन्धु लिपि खरोष्ठी या अरवी की भांति दाई से बाई ओर लिखी जाती थी। कभी-कभी इसे सर्पाकार शैली में भी लिखा जाता था ।

मृण्मूतियां (terracotta) --

कालीबंगाँ ं से प्राप्त हड़प्पा काल की मृण्मूतियों में सबसे सुन्दर एक हमला करते हुए सांड की मूर्ति है। इस मूर्ति के गठन में कलाकार का वास्तविकता से अनुप्राणित शिल्प-सौन्दर्य जीवन्त हो उठा है। पशु का युद्धोन्माद, हलकी झूकानयुक्त गर्दन, तना हुआ शरीर हड़प्पा युग की वास्तविक और सशक्त लोक कला का परिचायक है। अन्य दृष्टव्य वस्तुओं में बेलनाकार अंशांकित पैमाना तथा एक पुरोभाग व पृष्ठभाग में उत्कीर्ण मानवाकृतियुक्त मृत्पिड मुख्य हैं।

कालीबंगाँ के पशु (animals of Kalibangan) -

कालीबंगाँ के उत्खनन से कई पशुओं के अस्थि अवशेष प्राप्त हुए हैं। इनके प्रारंभिक अध्ययन से ज्ञात होता है कि उस युग में ककुद्मान (कूबड़ वाला) बैल, भैंस, सूअर, बारहसिंघा, हाथी, ऊंट, गधा, गैंडा, चीतल और मुर्गा विद्यमान थे। इनमें कूबर वाले पशुओं की अस्थियाँ सबसे अधिक मात्रा में मिली हैं। ऊंट की हड्डियाँ तथा मृगश्रृंग की उपलब्धि भी महत्वपूर्ण है।

शवसंस्कार प्रथा (Burial system) -

कालीबंगाँ के दुर्ग से लगभग 300 मीटर पश्चिम दक्षिण में हड़प्पा कालीन कब्रिस्तान मिला है। यहां पर तीन प्रकार की शवाधान पद्धतियाँ प्रकाश में आई हैं-

1. आयताकार अथवा अंडाकार गर्तों में सशरीर शवाधान । इसके अन्तर्गत शव को सीधा लिटाया जाता था ।

2. वृत्ताकार गर्तो में घट-शवाधान, और

3. आयताकार अथवा अंडाकार गर्तों में मृद्भाँड निक्षेप । दूसरे तथा तीसरे प्रकार की कब्रों में शव नहीं पाए गए हैं। संभवतः ये प्रतीकात्मक शवाधान के कोई रूप रहे हो। इस प्रकार की प्रथा हड़प्पा संस्कृति कृति के अन्य स्थलों में नहीं मिलती है।

प्रथम प्रकार की कब्र (First Type of grave) - इस पद्धति में एक आयताकार या अंडाकार गर्त के तल पर मृत शरीर को लिटा दिया जाता था उसका सिर उत्तर दिशा में होता था। सिर के पास मिटटी के पात्र रखे जाते थे। एक कब्र में इन सब वस्तुयों के अतिरिक्त एक तांबे का दर्पण भी रखा गया था। इसके बाद को उसी मिटटी से बन्द कर दिया जाता था। एक कब्र के चारों और कच्ची ईटों से चिनाई की गई थी तथा ईटों के अन्दर की और पलस्तर भी किया गया था । अस्थिपंजर अवशेषों से पुरारोग (Palacopathological) विषयक उपयोगी प्रमाण मिले हैं। एक शिशु की खोपड़ी में छः गोल छिद्र थे, जिनसे कपाल छेदन क्रिया का प्रमाण मिलता है।

द्वितीय प्रकार की कब्र (Second type of grave)-

ये कब्रें गोलाकार थीं। इनमें एक कलश के अतिरिक्त थालियाँ तथा अन्य मिट्टी के पात्र रखे थे। साधारणतः ये पात्र कलश के चारों ओर रखे गए थे, जिनकी संख्या 4 से लेकर 29 तक थी । मृदभांड के अतिरिक्त कुछ गर्तों में मनके, शंख वलय तया कुछ घीया पत्थर की वस्तुए भी मिली हैं।

तृतीय प्रकार की कब्र (third type of grave)-

ये कब्रें आयताकार अथवा अंडाकार थीं । इनका लंबा अक्ष, प्रथम प्रकार की कत्रों के समान उत्तर दक्षिणो-न्मुख था। इन कब्रों में शव के अवशेषों का न पाया जाना आश्चर्यजनक है। इस प्रकार के गर्तों में केवल मृद्मांड तथा शंखवलय, घीया पत्थर के मनकों की लड़ी तथा तामड़े पत्थर के मनके पाए गए हैं। इनमें से कुछ गर्तों से भरन (filling) से संबन्धित भी कुछ रोचक प्रमाण मिले हैं। गर्तों की भरन में अस्थिसामग्री के ऊपर महीन रेत और चिकनी मिट्टी की परतें पायी गई हैं। किसी कारणवश गर्त को भरा नहीं गया और संभवतः इसीलिए गर्त में रेत और चिकनी मिट्टी की परत जमा हो गई। बाद में गर्त में मिट्टी के ढेले भर दिए गए। हड़प्पा काल की पुरानी कब्रें उसी काल की बाद में बनी कब्रों के ऊपर बन जाने से कट गई थी और कभी-कभी अस्तव्यस्त हो गई थीं।

संस्कृति का उदय व अस्त(Beginning & End of the Culture)

कालीबंगाँ ं के उत्खनन में प्राप्त दो कालों के अवशेषों को प्राक् हड़प्पा तथा हड़प्पा संस्कृति में विभाजित किया गया है। प्राक् हड़प्पा संस्कृति का विस्तार स्थानीय भेदों के साथ एक बड़े क्षेत्र में और कालीबंगाँ ँ से प्राप्त इस संस्कृति के अवशेषों को "कालीबंगाँ संस्कृति" की संज्ञा दी गई है। इस संस्कृति का हड़प्पा संस्कृति के उद्भव और विकास में योगदान के विषय में अभी कुछ निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है। इस समस्या के समाधान के लिए भारत में प्राक् हड़प्पा के अन्य स्थलों तथा सिंध व बलूचिस्तान क्षेत्र में उत्खनन व अन्वेषण आवश्यक है। इन दोनों संस्कृतियों में कुछ समानतायों के साथ भिन्नताएँ भी हैं। प्राकृ हड़प्पा संस्कृति युगीन मकानों की दशा तया ईटों का आकार, मृदभांड, पत्थर के चाकुओं व फलों का आकार भी हड़प्पा काल से भिन्न है। प्राक् हड़प्पा काल में मुद्रा तथा मुद्रा के छापे सर्वथा अप्राप्य है। समानताओं की स्थिति अधिक है। दोनों कालों में मत्स्यशल्क, अश्वत्य पत्र, रज्जुरूप आदि अभिप्राय, भांडों में खुरच कर लिखे गए कुछ प्रतीक, पीठयुक्त चाली (dish on stand), छल्लेदार पैदे बाले वर्तन तथा ढक्कन आदि मृदपात्र, मिट्टी की वृषभाकृतियां एवं खिलौना गाड़ी के पहिए, शंखवलय, घीया पत्थर के चकलीनुमा मनके (dish beads) आदि समान हैं। सिल बट्टे का उपयोग तथा घातु क्रिया का ज्ञान, दुर्ग एवं प्राकार की कल्पना, ईंटों की चिनाई की प्रणाली में भी दोनों संस्कृतियाँ मिलती जुलती हैं। प्रमाणों से यह भी ज्ञान होता है कि हड़प्पा संस्कृति से सम्बद्ध लोग कालीबंगाँ ं में आकर बसने पर अपनी उच्च स्तर की संगठित सभ्यता के प्रवर्तन के साथ-साथ वहाँ के मूल निवासियों के साथ रहते रहे। संभवतः इसका कारण उनके मध्य आपसी शत्रुता का अभाव था। किन्तु यह कहना कठिन है कि हडप्पा संस्कृति के तत्वों का कालीबंगाँ की पूर्ववर्ती प्राक् हड़प्पा संस्कृति से ही विकास हो । इस संस्कृति का अन्त किन कारणों से हुआ यह केवल अनुमान का ही विषय है। अभी तक इस संबंध में निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता है। किन्तु इतना निश्चित है कि इसका अन्त विदेशी आक्रमण अथवा किसी प्राकृतिक जल प्लावन के कारण नहीं हुआ । संभवतः जलविभाजक क्षेत्र में अत्यधिक चराई और वननाश के कारण कालान्तर में नदी के जल की मात्रा में कमी के कारण बाढ़ द्वारा लाई गई उपजाऊ मिट्टी का क्षेत्र कम होता गया, जिसके कारण अन्न-उत्पादन में कमी हो

गई, फलस्वरूप यहां के निवासियों को यथेष्ट अन्न मिलने में कठिनाई होने लगी और कालीबंगाँ के निवासी अधिक उपजाऊ स्थानों में जाकर बस गए ।

निष्कर्ष (conclusion)

कालीबंगा का ऐतिहासिक महत्व बहुआयामी और अत्यंत सर्वश्रेष्ठ है । यह स्थल सिंधु घाटी सभ्यता के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में स्थापित होता है, क्योंकि यहां प्राक् हड़प्पा (Pre-Harappan) और परिपक्व हड़प्पा (Mature Harappan) दोनों साँस्कृतिक स्तरों के प्रमाण एक ही स्थान पर प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार कालीबंगा साँस्कृतिक विकास की निरंतरता और संक्रमण की प्रक्रिया को समझने में अत्यंत सहायक सिद्ध होता है।
कालीबंगा से प्राप्त हल से जोते गए खेत के अवशेष विश्व के प्राचीनतम कृषि-साक्ष्यों में गिने जाते हैं। यह खोज न केवल भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीन कृषि परंपरा को प्रमाणित करती है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि यहाँ के निवासियों वैज्ञानिक एवं योजनाबद्ध कृषि पद्धति से परिचित थे। इसी प्रकार अग्नि-वैदिकाएँ धार्मिक जीवन के अध्ययन में विशेष महत्व रखती है, क्योंकि यह स्थल को अन्य हड़प्पा नगरों सेअलग पहचान प्रदान करती है।
नगरीय योजना के संदर्भ में कालीबंगा का योगदान उल्लेखनीय है। यहाँ ग्रिड- पद्धति पर आधारित सड़क व्यवस्था, सुव्यवस्थित जल- निकासी प्रणाली योजनाबद्ध शहरी जीवन के सशक्त प्रमाण प्रस्तुत करतेहैं। यह दर्शाता है कि उस समय का समाज सुसंगठित प्रशासन और सामाजिक अनशुासन से युक्त युक्त था।सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि कालीबंगा यह सिद्ध करता है कि सिंधु सरस्वती सभ्यता का विस्तार केवल सिंध और पंजाब तक सीमित नहीं था, बल्कि वर्तमान राजस्थान क्षेत्र तक भी व्यापक रूप से फैला हुआ था। इस युग में यहां के निवासी पक्की मिट्टी से अनेक प्रकार के बर्तन बनाते थे । ताँबे व पत्थरों के औजारों का प्रयोग करते थे। माल ढोने व आवागमन के लिए संभवत: बैलगाड़ी का भी उपयोग करते थे। वे कच्ची मिट्टी के सुनियोजित मकानों में रहते थे। इन मकानों की चुनाई में ईटे आाड़ी व सीधी(english bond se)रखी जाती थी और फिर दीवार उठा दी जाती थी।वहाँ के उत्खनन में प्राकृतिक धरातल से 160 मीटर तक प्राक् हड़प्पा संस्कृति के चिन्ह पांच वास्तु प्रकालों के अन्तर्गत मिले थे। इनके ऊपर बालू की एक परत स्खलित एवं ध्वस्त वास्तु अवशेषों को ढकती हुई पाई गई। इससे अनुमान लगाया जाता है कि भूकम्प आदि किसी प्राकृतिक प्रकोप के फलस्वरूप यहाँ की बस्ती उजड़ी थी ।
इस प्रकार कालीबगं भारतीय प्राचीन इतिहास के अध्ययन में भौगोलिक विस्तार , सांस्कृतिक विविधता और सभ्यतागत विकास को समझने का एक प्रमुख आधार बनता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1)डा० बेजनाथ पुरी, पुरातत्व विज्ञान, किताब महल इलाहाबाद
2. ठाकुर. बी. के. कालीबंगा: ए हड़प्पन मेट्रोपोसलस बियोंड द इंडस वेली ,नई दिल्ली: भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ।
3)जॉन मार्शल. मोहनजोदड़ो एंड द इडंस सिविलाइजेशन. लंदन।
(4.) आर. एस. विष्ट. हड़प्पन सिविलाइजेशन आर्कियोलॉजिकल पर्सपेक्टिव्स. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड एंड आईबीएच।

(5) भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण . इंडियन आर्कियोलॉजी द रिव्यू (1960–69) ।

(6)भारतीय इतिहास अनसुंधान परिषद. हड़प्पा सभ्यता पर शोध-संकलन, नई दिल्ली

(7) मार्टिमर व्हीलर. द इडंस सिविलाइजेशन. कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

(8)बी. बी. लाल. द अर्लीस्ट सिविलाइजेशन ऑफ ऑफ साउथ एशिया. नई दिल्ली आर्यन बुक्स इंटरनेशनल

(9)शिरीन रत्नागर, अंडरस्टैंडिंग हड़प्पा. नई दिल्ली: तुलिकाबुक्स

(10)एस. पी. गुप्ता. द इडंस-सरस्वती सिविलाइजेशन. नई दिल्ली: प्रतिभा प्रकाशन।

(11)आर. सी. मजमूदार. एंशिएंट इंडिया . दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।

(12)एम. के. धवलीकर. इंडियन प्रोटोहिस्ट्री. नई दिल्ली

(13)एच. डी. संकलिया प्रीहिस्ट्री एंड प्रोटोहिस्ट्री ऑफ इंडिया एंड पाकिस्तान. पुणे ।

(14)ए. एल. बाशम. द वंडर दैट वाज़ इंडिया. लंदन।

(15)उपेंद्रसिंह. ए हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट एंड अर्ली मीडीवल इंडिया. नई दिल्ली